JETIR.ORG
ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

डॉ अशोक कुमार सिडाना
पूर्व आचार्य
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सी.टी.ई.

सुभाष मीना
शोधार्थी
शिक्षा विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर
केशव विद्यापीठ जामडोली जयपुर

JETIR

सारांश :

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रस्तुत शोध में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन की अवधारणा, अर्थ एवं स्वरूप व वेदान्त शिक्षा दर्शन के स्वरूप का अध्ययन किया गया। वेदान्त दर्शन में शिक्षा की संकल्पना, वेदान्त दर्शन के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य, वेदान्त आदर्श तथा व्यावहारिक जीवन, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, ज्ञान प्राप्ति के अंग, ज्ञान प्राप्ति के स्त्रोत, ज्ञान प्राप्ति के साधन, ज्ञान प्राप्ति के प्रकार, वेदान्त और अनुशासन, बालक का सामाजिक विकास, वेदान्त दर्शन के अनुसार विद्यालय की अवधारणा, वेदान्त दर्शन में शिक्षक की संकल्पना, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध, वर्तमान शैक्षिक शिक्षा के तहत वर्तमान शैक्षिक शिक्षा की विशेषताएं तथा वर्तमान शिक्षा में वेदान्त दर्शन के शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्श की प्रासंगिकता ज्ञात की गई तथा वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया।

प्रस्तावना :

भारतीय शिक्षा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। प्राचीन भारत में शिक्षा के स्वरूप का वर्णन हमें वेदों से मिल जाता है। वेदों में ऋग्वेद आदिवेद माना जाता है। इसी वेद में तत्कालीन शिक्षा के स्वरूप का दर्शन मिलता है। वेदों के अनुसार शिक्षा के द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति की जा सकती है। ऐसा विश्वास किया जाता था कि शिक्षा ही ज्ञान चक्षु खोलती है। शैक्षिक युग और महाभारत काल में वेद, पुराण, दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण तथा कला आदि विषयों का अध्ययन किया जाता था। वर्तमान में शैक्षिक युग ने अंतरिक्ष और समय की सीमाओं को तोड़ा है। उन्नत सूचना और तकनीकी का उपयोग करते हुए ज्ञान, शिक्षा और सीखने की एक नई प्रणाली में समकालीन और अतुल्यकालीन विधियों की एक विस्तृत श्रृंखला लागू हुई है जो शिक्षक और छात्र को अंतरिक्ष और समय की सीमाओं को तोड़ने में सहायता करती है। ?

अतः वर्तमान बदलते शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का परीक्षण करना आवश्यक हो गया है। क्योंकि आत्मा को ब्रह्म के समान सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ तथा सर्वदर्शी माने बिना लोकतंत्र का मौलिक अधिकार की गरिमा कोई मायने नहीं रखता है। अध्यापक के लिए बालक के व्यक्तित्व का समादर कर पाने की बात वेदान्त के अलावा कौनसा अन्य दर्शन है जो इतनी दृढ़ता के साथ कह सकता है। यदि वर्तमान शिक्षा में लोकतंत्र की भावना, समानता, स्वतंत्रता, वसुधैव कुटुंबकम् को

चरितार्थ करना है तो वेदान्त का सहारा लेना ही पड़ेगा। शिक्षा के समानता के आदश को स्वीकार करना ही पड़ेगा। इसी कारण वर्तमान शिक्षा में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है।

समस्या कथन :

''वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन।''

समस्या का औचित्य व प्रासंगिकता :

आज आधुनिक समय में पूरा विश्व मौलिक रूप से बदल गया है, जिसके फलस्वरूप भारत में भी आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। हमारी प्राचीन शिक्षा भारतीय दर्शन एवं संस्कृति पर आधारित रही है जो उच्च शिक्षा आदर्शों पर आधारित रही है। परन्तु वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में हम भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के आदर्श भूलते जा रहे हैं, अतः आवश्यकता है कि हम अतीत में झांके तथा वेदान्त शिक्षा दर्शन के उपयोगी तत्वों व विशिष्ट गुणों को जानकर उनका वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का पता लगाकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली का वास्तविक अर्थ में सुधार कर सकें। यही प्रस्तावित शोध का औचित्य एवं महत्व है।

पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या :

शैक्षिक : शिक्षा सम्बन्धी।

परिपेक्ष्य : दृष्टि और दृश्य बोध के संदर्भ में वह तरीका है, जिसमें वस्तु स उनके आयामों या विशेषताओं और वस्तुओं के सापेक्ष आंख की स्थिति के कारण आंखों को दिखाई देते हैं।

प्रासंगिकता : का अर्थ यह है कि कोई सूचना, क्रिया या वस्तु किसी मामले में मुद्दे से कितना सम्बद्ध है।

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन :

प्रस्तुत शोध में अध्ययन को वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन तक सीमित किया गया है।

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध में वेदान्त दर्शन की शिक्षा सम्बन्धी विचारों के अन्तर्गत शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षा व्यवसाय, शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, छात्र अनुशासन, विद्यालय की अवधारणा तथा वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का पता लगाना व वेदान्त दर्शन में शिक्षा के मूल्य एवं आदर्श का अध्ययन करना रहा है।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध में दार्शनिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त संकलन एवं व्याख्या :

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन होने के बाद वेदान्त शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने हेतु विभिन्न पुस्तकालयों में जाकर विस्तृत अध्ययन किया। सम्बन्धित साहित्य तथा वेदान्त दर्शन की शिक्षा प्रणाली, गुरु–शिष्य के सम्बन्ध, वेदान्त शिक्षा दर्शन में पाठ्यक्रम, वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता, वेदान्त दर्शन में शिक्षा के मूल्य एवं आदर्श का विस्तृत अध्ययन कर तथ्यों का संकलन किया गया तथा उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

शोध निष्कर्ष :

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करने से इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वेदान्त दर्शन में शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता आज भी शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में चरितार्थ होती है। क्योंकि आत्मा को ब्रह्म के समान सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ एवं सर्वदशो माने बिना लोकतंत्र का मौलिक अधिकार व्यक्ति की गरिमा कोई मायने नहीं रखता है। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भी शिक्षा को सही दिशा दिखाने के लिए स्वतंत्रता तथा संयम के बीच समन्वय स्थापित करना आवश्यक है।

सुझाव :

प्रस्तुत शोध वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्तमान शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जा सकता है तथा वेदान्त शिक्षा दर्शन के संदर्भ विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रस्क आर.आर. : शिक्षा के दार्शनिक आधार
2. चतुर्वेदी सीताराम : शिक्षा दर्शन
3. भाटिया बी.डी. : फिलोसोफी ऑफ एजुकेशन
4. चौबे एस.पी. : एजुकेशनल फिलोसोफीज इन इण्डिया
5. राधाकृष्णन एस. : शिक्षा के दार्शनिक आधार
6. चौहान आर. एस. : शिक्षा के दार्शनिक आधार
7. जौहरी बी.पी. : भारतीय शिक्षा का इतिहास
8. मुखर्जी राधा कुमुद : प्राचीन भारत
9. पाण्डेय राजेन्द्र : भारत का सांस्कृतिक इतिहास